उदयरत्नजी कृत जोगमायानो सलोको

सं. डो. निरंजन राज्यगुरु

पू. श्री आचार्यश्री विजयशीलचन्द्रसूरिजी महाराज साहेबना विहार दरम्यान वढवाण (जि. सुरेन्द्रनगर) खातेथी प्राप्त थयेल आ रचनानी झेरोक्स नकल परथी आ वाचना तैयार करी छे.

विक्रम संवत १७७० ना पोष सुदी सातमना रोज सर्जन थयुं अने वि.सं. १८७१ आसो सुदी ४ ना रोज लहिया मुनि गुणरत्नजी द्वारा जेनुं लेखन थयुं छे ते 'उदयरत्नजी कृत जोगमायानो सलोको'नी कुल पांच पानांनी हस्तप्रत बन्ने बाजु लखायेली छे. ११" x ६" नी साईझमां दरेक पेइज उपर १३ के १४ पंक्तिओ लखाई छे. नवमा छेल्ला पेज उपर पांच पंक्ति छे. आ रीते कुल ७८ कडीनी रचना १११ पंक्तिओमां लखायेली छे.

सर्जक कवि उदयरत्नजी:

पार्श्वनाथ प्रभुना गणधरनी परम्परामां रत्नप्रभसूरि थया, तेमना ३८ मी पाटे देवगुप्तसूरि थया. देवगुप्तसूरिना शिष्य कक्कसूरि मूळ उपकेशगच्छमांथी नीकळी तपागच्छमां भळेला अने राजविजयसूरि नाम स्वीकारेलुं. तेमना शिष्य रत्नविजयसूरि पछी शिष्योना नाम पाछळ 'रत्न' शब्द शरु थयो. आ रीते रत्नशाखामां थयेला कवि उदयरत्नजीना गुरुनुं नाम शिवरत्नसूरि हतुं.

कविश्री उदयरत्नजीओ संवत १७७०मां बारेजामां शरु करेला अने खेडा गामे पूर्ण करेला 'श्री भावरत्नसूरि प्रमुख पांच पाट वर्णन गच्छ परम्परा रास'मां आ समग्र माहिती आपवामां आवी छे.

[जै.गू.क. भाग ९ पृ. ९५]

उदयरत्नजी खेडाना रहीश हता अने तेमनुं अवसान मियांगाममां थयुं एम कहेवाय छे. तेओश्रीने शृंगाररसभरित 'स्थूलिभद्र नवरसो' लखवाने कारणे आचार्ये संघबहार काढेला, पछी 'नववाड ब्रह्मचर्य'नी रचना करतां फरी प्रवेश मळ्यो एम नोंधायुं छे.

खेडाना रत्ना भावसार नामना कविओ उदयरत्नजी पासे काव्यशास्त्रनो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास करेलो.

उदयरत्नजी द्वारा वि.सं. १७४९ थी शरु करीने वि.सं. १७८२ सुधीना समयगाळा दरम्यान त्रीशेक नानी मोटी रचनाओ अने छूटक स्तवन-सज्जायोनी रचना थई होवानुं नोंधायुं छे. श्री केशवलाल सवाईभाई द्वारा प्रकाशित 'सलोका संग्रह'मां 'श्री नेमिनाथनो सलोको', 'शालिभद्रनो सलोको', भरतबाहुबलिनो सलोको' जेवी केटलीक रचनाओ प्रकाशित थई छे परंतु अहीं अपायेल 'जोगमायानो सलोको' आज सुधीना कोई ज सन्दर्भग्रन्थोमां नोंधायेल जोवा मळ्यो नथी. कोई हस्तप्रतसूचिमां पण एनी यादी नथी मळती.

एक सुप्रसिद्ध जैन साधु-कवि शक्ति मातानी पुराणप्रसिद्ध कथानो सलोको रचे ए वात जराक विचित्र जणाय तेवी छे. लागे छे के कवि उदयरत्ने 'शक्ति' तत्त्व प्रत्ये गहन आस्था हशे, अने तेथी प्रेराईने तेमणे आ सलोकानी रचना करी हशे. एवी पण अटकळ करी शकाय के ते कविने संघ बहार मूकवानुं खरुं कारण तेमनी आवी 'अन्याश्रय' रूप गणी शकाय तेवी आस्था तथा ते आस्थाना प्रगटीकरण-रूप आवी रचना ज होय; शृंगारवर्णन ओ बहानुं होय.

सलोकानो आछो परिचयः

सलोकानो प्रारम्भ कवि, परम्परानुसारी तीर्थंकर-वन्दन के गुरु-स्मरण वगेरे प्रकारना मंगलाचरणथी नथी करता, परंतु आ प्रकारनी प्रसिद्ध रचनाओनी आगवी पद्धति मुजब ओंकारना स्मरण पूर्वक करे छे.

अम्बा, जोगमाया, शक्ति, बहुचरा, पार्वती, दुर्गा-इत्यादि शक्तिवाचक नामोनो आमां अनेकवार प्रयोग जोवा मळे छे, अने शक्तिने जगतजननी के जगतनी सर्जनहार, रक्षणहार वगेरे रूपे ज कविओ वर्णवी छे; जे बधुं एक जैन परम्पराना कविना मुखे वर्णवातुं होईने विशेष रसप्रद बनी रहे छे.

प्रसिद्ध कथा प्रमाणे, शुम्भ-निशुम्भ ए बे दानवोओ, हरि, हर, ब्रह्मा, इन्द्र सहित तमाम देवोने हराव्या छे ने स्थानभ्रष्ट करी भगाड्या छे; त्यारे ते देवोओ हिमालयमां अम्बामाता पासे आवीने अरज करी के आ दानवोथी तमे अमारी रक्षा करो. देवोनी प्रार्थना शक्तिमाता स्वीकारे छे, अने पछी मायावी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूपसुन्दरीना रूप द्वारा शुम्भने लोभावी युद्धना मेदानमां घसडी लावी तेने तथा तेना समग्र सैन्यने नष्ट करी, देवोने पुनः स्वस्थाने प्रस्थापित करी आपे छे. प्रान्ते कवि कहे छे के महाकाली, महासरस्वती तथा महालक्ष्मी - आ त्रण तमारां स्वरूप छे, अने आ त्रणे रूपे तमे ज जगतनुं रक्षण करो छो.

देवी-दानव-युद्धवर्णनमां देवी द्वारा प्रयोजातां शस्त्रास्त्रो तथा तेनी विविध क्रियाओनुं वर्ण अत्यन्त जीवंत तेमज वीररस-छलकतुं छे. ६० मी कडीमां तो कवि देवीना हाथमां 'बंधुक' (gun) पण मूकी आपे छे अने गोळी पण छोडावे छे ! तो ६२मी कडीमां वलोणांनुं रूपक कविओ आप्युं छेः खड्गरूपी मन्थान (रवैया) वडे शत्रुना दळने वलोवी शत्रुनी इज्जतरूपी माखण देवी ऊतारी ले छे- तेवा मतलबनुं ए रूपक खूब चमत्कृति सर्जनारुं बन्युं छे.

७१मी कडीमां वळी कवि शत्रुओना चित्तमां एवो प्रश्न उत्पन्न करे छे के 'अमे पुरुष शुं काम पेदा थया ? (आ करतां स्त्री थयां होत तो आ देवी-स्त्री जेवी शक्ति अमारामांय आवत !) आ कडीमां 'शत्रु चेंतें अमे पुरुष कां सरजा ?' ए पंक्तिमां 'चेंतें' पदनो अर्थ शुं थशे ? 'चिंते' एवो अर्थ ज तरत समजाय छे. बाकी जो ते क्रियापदने कच्छी बोलीना क्रियापद तरीके स्वीकारीओ तो, शत्रु 'चेंतें' अर्थात् 'शत्रु कहेता हता (कहेवा लाग्या)' एवो अर्थ पण करी शकाय खरो.

आ सलोकानी बीजी प्रतिओ कोई ने कोई भण्डारमां होवी तो जोईए ज. जो ते मळी आवे तो पाठशुद्धि माटे खपमां जरूर आवी शके.

अहीं तळपदा शब्दोना प्रयोगो घणा छे, अने नोंधपात्र छे. 'भचरड्या' (६५), 'लापोट' 'थापोट' (६६) 'गणणाव्यां' (६८), 'चुपट' (६९), 'गरदी' (७०), 'तम्यो' (७७) वगेरे. आमां क्यांक क्यांक चारणी जबाननी छांट पण होवानुं कळी शकाय तेम छे.

देवीना रूपवर्णननी तथा दानव साथेना युद्धवर्णननी कडीओ साचेज रसदायक तथा अभ्यासयोग्य छे. शक्ति-वर्णननी अन्य छन्दरचनाओ साथे आनी सरखामणी करवी ए पण एक रसप्रद अभ्यास-विषय बनी रहे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोगमायानो सलोको

बावन अक्षरमां ॐकार बलीओ
किणें तेहनो भेद न कलीओ
सीद्ध साधक जेहनें साद्धे
वंदुं तेहनें जम मति वाद्धि ॥१॥

आदि हरीहर बंभ उपाया
जगत-जननी छें जे जोगमाया
सुंदर तेहनो कहुं सलोको
लीला अंबानि सांभळजो लोको ॥२॥

इच्छा पूरें ए अखील ब्रह्मांडि
रहि व्यापीने रूप अखंडे
जगमां सेवकनां संकट जांणी
मायारूपे जे धरें ब्रह्मांणी ॥३॥

आदि अनादि एह ज जांणो
सघलो संसार अेहथी रचांणो
आपे थापें ने आपें उथापें
करुणा करें तो बंधन कापे ॥४॥

करता हरता छें अेह कल्यांणि
सक्ती विना कोई सोभो नही प्रांणी
चारु-करमी ते अेहनें वलगा
अकरमी विना कोई नवी रहें अलगा ॥५॥

भवनुं मंडाण अछें भवानी
दीलनी चिंता चुरे देवानी
क्रोधें करीने नजर करडी
मधु कैटभ नांख्या छें मरडी ॥६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देखी देवने दुःख उपातो
मार्यो महीषासुर दाणव मातो
सुरथ वैसनें वरदांन दीधुं
राज्य वालु नें कारज कीधुं ॥७॥

हरी हर बंभ नें रवी ससी जोडि
सुरपति देवता तेत्रीस कोडि
शुंभ दैतें ते सघळा हराव्या
हार मांनीने हेंमाचल आव्या ॥८॥

अंबाजि आगल्य अरज करे छें
दीलमां देवता दुःख धरे छें
देवी दांणव-सुभट छें दुष्ट
अमनें कीधा तेंणें थांनक-भृष्ट ॥९॥

नीपनी छोंड्या सुरीनर नांग
जोरें रोक्या छें जगन नें जाग
त्रीभोवन कंटक म्लेच्छ ए ताजो
मनमां नांणें केहनो मलाजो ॥१०॥

वलती वेंमासी तव कहें इंम वेंमला
कहो आपणी तजीने कमला
भइं दांणवनें तुमें सुं भागा
इम नासीने आवी इहां लागा ॥११॥

तिहारें सुर कहें हाथ तमारें
अेहनुं लख्यु छें मरण आ वारें
वदी बत्रीसी वरदांन वारु
देवी रचें तीहा रूप दीदारु ॥१२॥

वरसां बारांक तेराकवाली
बाल कुंआरी सुदर सुखमांलि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुडी रुपाली अजब रंगीली
छलवा दैतनें थई छबीली ॥१३॥

पद पंकज पलव वराजें
लाल सुरंगां मांणेक लाजें
उपें हीरा-सी नखनी ओल
रुडी पांनी बहु कुंकुम रोल ॥१४॥

पिंडी ऊतरती एडी लंकाली
केळ-थंभ-सी जंघ सुहाली
कटनें लंकें केसरी हारीं
भुज नीतंब उनत भारें ॥१५॥

पातलपेटी नें नाभ्य गंभीर
युग्म पयोधर जांणें जंबीर
हार कमलनी हाथनें लटकें
मोहें मुंनीजन मुखडानें मटकें ॥१६॥

दंत दाडिमनी कलीनें जीपें
दीपसीखा सी नासीका दीपें
होठ परवाली रही छे हारी
मृगनयणी मोहनगारि ॥१७॥

भमर कबांन नयण सोभाला
खलक देखीने पांमें सहु ख्याला
वेंणें वासंग आवीने वसीओ
जांणें मुख सशी जोवानें रसीओ ॥१८॥

सीसफूलनें गोफणो नीको
दीपे जडाव डांमणीओ टीको
हीई सरबंध सिंथो समारो
ओपें आंखडीअे काजल सार्यो ॥१९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कांने कुंडल रवी ससी जोती
मुंघ मुलांनी नाके छें मोती
सोवन रेखाओ रदनें
वारु विराजें तंबोल वदनें ॥२०॥

कंठे रेखा त्रण सोहि जम कंबु
तांणा कंचुकसुं थणहर तंबु
हिई चोसरो नवसर हार
बाजुबंधनु तेज अपार ॥२१॥

जडीत चुंनडीओ झगमग झलके
कटिमेखला खल खल खलके
पाए नेपुर पायल वाजें
जांणे भाद्रवें जलधर गाजें ॥२२॥

ठम ठम अणवट विछुआ ठमकें
घम घम घुघरी गोफणो घमके
जडीत जालीमां जड्यां छे नंग
हाथें अंगूठी मिंदी सुरंग ॥२३॥

मिहेंकें चंदन मृगमद पुर
सोहें मुख-नुर उगतो सुर
चरणा चोलीनें चोसर फुले
उपे अंबाजी चीर अमुलें ॥२४॥

जाइ जोवन लेंहिरिं जम गंग
केसर-वरणुं छें कोमल अंग
गमन करंतां गिरमां जणाई
जाणे वादलमां वीजली थाई ॥२५॥

दांणव मल्या छें दातणनें काजें (में)
ततखेंण त्रीपुरा जाइ तेणें ठांमें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेंण वाहीने राग आलापें
थेई थेई ता थेई शु पद तां थापे ॥२६॥

खांते खेलती घुंघट खोलि
बोलि मीठु जम कोयल बोले
रूप जोवानें रवीरथ थंभें
असुर देखीनइ पड्या अचंभें ॥२७॥

पूच्छि राखस पातलपेटी
किहां वसें तु केहनी छे बेटी
ठांम तमारो इहां न ठावो
किम आव्यां छो आघेरां आवो ॥२८॥

तिहारें त्रीपुरा कहिं ललकावी मोति
जिहां तीहां फरुं छुं वरने जोती
युद्धें करीने मुजने जे जीतें
तेह पुरषने परणुं प्रीतें ॥२९॥

बलीओ मुजने कोई झालि बांहि
नथी देखति त्रीभोवन मांहि
भाखें भवांनी टेक धरीनें
जल थल जोउ छुं तेणें करीनें ॥३०॥

ईम सुंणीनें असुर पयंपें
जेह आगलि जग सहु कंपि
शुंभ नांमे छें साहिब अमारो
तेह पुरसें मनोरथ तारो ॥३१॥

राखस वंशनो मोटो राजांन
सुरो नहि कोई जेह समांन
मांननी तुंमनें ते देसें सही मांन
नारी बीजीने तजी नीदांन ॥३२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भद्रकाली तव कहें इणी भांति
खरी.... युद्धनी खांति
भडि मुझसुं जे रणमां भुपाल
मोदें तेहनें ठवुं वरमाल ॥३३॥

एहवो अंबाना मननो आकुत
दाणव शुंभने दाखें जई दुत
बिठी हिंमाचल उपर एक बालि
रमणी रंभथी अद्धीक रूपाली ॥३४॥

जुद्धें जीतें जे मुझनें जोरालो
वरुं ते वर मरद मुंछालो
कंन्या संग्रांम करसें ते केहवो
असुर मलीनें विमासे एहवो ॥३५॥

पापी शुंभे तव दुत पठायो
धुंम्रलोचन द्ववर (?) धायो
सीहणि आगलि जम सीयाल
तेंम ते हरसीद्धी हाथे लिहिं काल ॥३६॥

शुंभ तेहनी ते सांभली वात
चंड मूंड बें दैत वीख्यात
आपें तेहनें एम आदेश
कांमण्य ते लावो झालीनें केश ॥३७॥

दल लेइनें दुत ते धाया
हल हल करीनें हिमाचल आया
भारथ तेहसुं रचींने भारी
वाघवाहनी नांखें वीदारी ॥३८॥

चुर्या चंड नें मुंड बें भूंडा
थयुं चीं(चं)डीनुं नांम चांमुंडा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोल वरत्यो ते राखसें जांण्यों
तइहारि अबलानो भय मन आंण्यो ॥३९॥

खरी मनमां वलि आंणीनें खीज
रोस धरीनें रगत बीज
रमणी लेवानें राखस-राजा
तरत मोकलें करी तगाजा ॥४०॥

जुधें अंबासुं जई ते जडीओ
जांणे छालीमां नाहर पडीओ
दैत्य दुर्गाइं आघो ते लीधो
पछें हालीइ घाउ ज कीधो ॥४१॥

पडें रगतना बिंदु जीहां जेता
थाइं राखसना रूप ज तेता
केता मारें ने केता संहारें
करें हरसीद्धी हुकम तेहारें ॥४२॥

लोहि लेईने घटघट पीई
वळी योगणीने वेंहचीनें दीई
क्रोधें तेहनुं मस्तक काप्युं
देवें बहुचरा नांम तीहां थापुं ॥४३॥

घणा संहार्या गीर्याई हाथें
संघला हुता जे तेहनें साथें
रगतबीजनी नीरसो जांणीनें
असुहीयामां अमरख आंणीनें ॥४४॥

वली बीजो तीहां नीसुंभ भाइ
सेना लेइनें पोहतो ते धाई
जोर तेहसुं मचाव्यो जंग
रणखेत्रनो वधार्यो रंग ॥४५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीध योगणीई ते पण्य संहार्यो
अंशमात्र न कोय उगार्यो
सुंभ सांभली तेह उदंत
आंणी रुदयामां रीस अत्यंत ॥४६॥

लाख गमे केई दांणव लुट्या
पहाड सरीखा जे जालम पोढा
बलिआ आभसुं भरें जे बाथ
सुभट अेहवा लेई राखसनाथ ॥४७॥

पान्य करीनें आयुध पूरें
चाल्यो रणवट वाजतें तुरें
जाणें उलटीओ जलनीधी पुर
मरद मूछाला म्लेच्छ माहाक्रुर ॥४८॥

खड्ग खेडा नें बगतर खलकें
झलहल झलहल बरछीओ झलकें
ढोल वाजे नें चमर ढलकें
कुर्म कडकडें शेष तां सलकें ॥४९॥

कंन्या वरवानें काजें उमाह्यो
अतुर थईनें मनसुं अलजायो
जांन लेइने शुंभ जोरालो
आव्यो हलकीने जीहां छें हिमालो ॥५०॥

छायो दिनयर खुरताल खेहें
जांणें कें घेर्यो आसाढें मेहें
नवल भेरी नें वाजें नीसांण
कड कड फरें तिहां बहुलां केकांण ॥५१॥

आव्यां दैतनां दल त्यां एम
कालि मेघनी काढ्यल जेम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रण-काहल वाजें रणसिंगा धीर
धिंगा सांभली तजे ज्यां धीर ॥५२॥

गरजें बोलें ते शुंभ गुमांनी
रखे छबीली रहि हवि छांनी
वनीता वहली था लागें छें वार
खडा झुझवा कोडि खंधार ॥५३॥

झबक लेइने तरुंआरि कालें
चतुरा चाहीने आघेरी चालें
जगमां कुण करें अमारी होड्य
करी युध नें पुरु कोड ॥५४॥

मुझ आगल तुं कुंण मात्र
गोरी तारो छें कोमल गात्र
बलें जोरें पणि तुझने हुं बाला
आखरे परणीस तजो तिणें चाला ॥५५॥

शुंभ सांभलजे साचुं हुं बोलुं
खांति ताहरी तो घुंघट खोलुं
ताती तरुआरि देखीश तारी
तारी प्रतीज्ञा पूरासें माहरी ॥५६॥

इंम कहीनें ईस्वरि आपें
सावज पूठें पल्हांण थापें
दंत पीसीनें दैतनें दलवा
हुंस करीनें रणखेत्र हलवा ॥५७॥

हाथे वीसे तीहां हथीयार झाली
चाचरें झुझवा सांमी ते चाली
म्लेच्छां मारण माहा मछराली
काली कंकाली थई कराली ॥५८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रणके रणतुर सिंधूई रागें
वेगें बछुटी लीधी तीहां वागें
दंत काढिनें दैत्यनं दुदाला
चढें रणमांहि केई वडाला ॥५९॥

हुउ कोलाहल कंकाल हुक
बहुलं धंधोली छुटे बंधुक
छय लच्छ छे हां दांणव छुटा
जणे धनुपर्था तीर बछुटा ॥६०॥

दैत्य चंडीनें विटी चोफेरें
जाणें सुकरें सीहण घेरी
वीसे भुजासुं वढें वाराही
मारें म्लेच्छनें मनसुं उंमाहि ॥६१॥

खड्ग घुंमावी मथांण घाट
दल वलोई कर्यो दहवट
इज्जत-मांखण लीउं ऊतारी
दुसमनका जम तीहां डारी ॥६२॥

मार्यो सुंभ नें उतार्यो मद
राखस रुद्राणीइं कर्या सहु रद
गुसी गदाइं गुरजें केई गुंद्या
छुटी जमधारें केताइक चुर्या ॥६३॥

केई पडतालें घाली पायालें
केई आकासें लीधा उलाली
केइं पछाडि प्रथीइं पाड्या
केइं त्रीशुलें तीर सुं ताड्या ॥६४॥

घणा तो मार्या मूशल्याइं
पाळी केताएक रगदोल्या पाअे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंगें अड्या ते भचरड्या उरें
मुह मरड्या केइ माहामुरे ॥६५॥

कुंहणी गदा कें पाटु लापोट
ठांमे राख्या केई मारी थापोट
हाथे पगे ने मस्तक हीई
आपें छेंदीनें उडाडी दीइं ॥६६॥

चक्रें चुर्या केई चुसीनें लीधा
पडता लोहीइ उपाडी पीधा
हजारगमे केई कीधा हजंम
लाखगमें तो राल्या उजम ॥६७॥

चरणे झाली ते नाख्या केइ चोली
केइ गणणाव्या गोफण गोली
ढाल वडें केइ धरणीइं ढाला
गर्व घणाना गेडीइ गाल्या ॥६८॥

वेंरी घणा तो वाघें वलुर्या
चापजोरें केई रणमांहि चुर्या
कुबधि केतांइक कुहाडे कुट्या
चुपट सांडसे घणा तो चुंट्या ॥६९॥

केई हुता जे जूधना कुसली
मुदगरें मारी लीधां ते मसली
मोह पमाडि नांख्या केइ मरदी
गगने उडाडी तेहनी गरदी ॥७०॥

संखनादें केई लीधा तीहां सोसी
खेरु कर्या केइ वरछीइं पोसी
तोमर हले केइ घुघरें तरजा
शत्रु चेंतें अमे पुरष कां सरजा ? ॥७१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विटलसंलाते मेहला वीगोई
जावा न दीधो जीवता कोई
पापी पाढा इम अंबानो परतो
जगमां संघलो तव जयकार वरत्यो ॥७२॥

ब्रमा आदि सहु देवता भावें
स्तवे अंबानें तिणें प्रस्तावें
आसा पुरें तुं संकट चूरें
दुरीत दुसमननें टालें तुं दुरे ॥७३॥

त्रीभोवन रह्यो छें ताहरें आधारें
तुठी तारें तुं रुठि संघारें
जीहा जीहा पार्वती तुं पद धारें
तिहारि सेवकनां काज सुधारें ॥७४॥

गढ मद(ढ)ने वावि तरु गीरवर गुफाइं
वासें वसें तु वली जल टाइं
वीश्वजननी तुं वीश्वमां व्यापी
आगम ताहरो कोइ न सके उप(पा)सी ॥७५॥

आसो माघ नें चैत्र आसाढें
अरचें तुझने जे उत्तम दाडें
नवरात्र नें नव नव दाडा
जालिम ते नर लहें सुख जो(जा)डा ॥७६॥

माहाकाली माहासरसती माता
माहालखमी तुं जगमां वीख्याता
त्रीधा रूपें तुं संसार तारें
तम्यो वरदाता विघन नीवारें ॥७७॥

संवत सतर सीतेरा वरषें
पोस मास सुदि आतम हरखें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोपें सलोको एह जोडायो
उदयरत्न कहे पुण्योदय मे पायो ॥७८॥
सं. १८७१ ना आसो सुदी ४ लखितं मुनि गुणरत्नेन ॥

★

शब्दकोश

कडी

१०	जाग	याग
१३	बारांक तेराक	बार तेर
	सुखमांलि	सुकोमळ
१४	उपें	ओपे-शोभे
	ओल	पंक्ति
१८	कवांन	कमान
	वेंणें, वासंग	वेणी (चोटलो), वासुकी (नाग)
२०	मुंघ मुलांनी	मोंघा मूलनी
	रदनें	दांत पर
२१	तांणा	(तंबू) तांण्या
२५	लेंहिरिं	लहेरो
२६	वेंण वाहीने	वीणा वगाडीने
३३	भडि	सुभट
३४	आकुत	आकूत-अभिप्राय
३७	कांमण्य	कामिनी
३८	भारथ	महाभारत/युद्ध
३९	तईहारि	त्यारे
४१	छालीमां	छालियामां(?)
	नाहर	जंतु विशेष (?)
४४	गीर्याइ	गिरिजाए
	अमरख	अमर्ष रोष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८	पान्य	पान(रक्तपान ?)
४९	बगतर	बख्तर
	कुर्म	कच्छप (कच्छपावतार)
	सेष	शेषनाग
५१	खेहें	खेह धूळ(उडती)
५२	काढ्यल	(?)
५४	तरु आरि	तरवार
६०	छय लच्छ	छ लक्ष
६१	सुकरें	सूवरे
६९	चुपट	चपटी (साणसानी)
७१	तरजा	तर्जना करी
७२	विटलसं लाते	(?)
७७	तम्यो	तमे

C/o. आनंद आश्रम
घोघावदर (दासी जीवण)
ता. गोंडल (राजकोट)

★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org